राजनीतिक भूगोल की विकास यात्रा

Dr. Sabiha Khan
Assistant Professor
Department of Geography
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

- राजनीतिक भूगोल का जन्म 1896 से 1897 में जर्मन विद्वान फेड्रिक रेटजेल के शोध प्रपत्र “राज्यों के क्षेत्र के विकास के नियम :राजनीतिक भूगोल के वैज्ञानिक अध्ययन में योगदान” तथा “राजनीतिक और भूगोल” के प्रकाशन के साथ हुआ।
- फेड्रिक रेटजेल को आधुनिक राजनीतिक भूगोल का जनक माना जाता है।
- इन्होंने लेबेंसरोम की संकल्पना दी।

सामाजिक विकासवाद तथा रेटजेल का राजनीतिक भूगोल

- फेड्रिक रेटजेल का जन्म 1844 में हुआ इन्होंने प्राणी विज्ञान में गहन अध्ययन किया जिसका प्रभाव राजनीतिक भूगोल में दिखाई दिया।
- यह डार्विन के “प्राकृतिक चुनाव” एवं “जातियों के उद्भव” तथा हरबर्ट स्पेंसर के “योग्यतम की उत्तरजीविता” सिद्धांत से प्रेरित थे।
- “जातियों के उद्भव” सिद्धांत मूल रूप से इस मान्यता पर आधारित था कि जातियां समय और स्थान के परिपेक्ष में उत्तरोत्तर संचयी विकास के परिणाम होती हैं। समायोजन एक स्वाभाविक और शाश्वत प्रक्रिया है।
- संसाधन क्षेत्र फर्क है सत्य अस्तित्व की सुरक्षा के लिए क्षेत्र प्रसार का संघर्ष स्वाभाविक है।

- **भूगोल प्रारंभ से ही मानव पर्यावरण तथा प्राकृतिक परिवेश के अंतर संबंधों का अध्ययन रहा है।**
- **सामाजिक डार्विनवाद।**
- **विभिन्न स्वतंत्र प्रभुता संपन्न राजनीतिक इकाइयों के शक्ति क्षेत्रों तथा वहां की निवास इस सामाजिक समूह में अंतरसंबंध होता है।**
- **राज्य जीवंत इकाइयां प्रतीत होती हैं।**
- **रेटजेल ने डार्विन की अध्ययन पद्धति के परीक्षण हेतु यूरोपीय देशों के क्षेत्रीय विकास के इतिहास का तुलनात्मक अध्ययन किया।**
- **रक्षा क्षेत्र प्रसार तथा शक्ति संचयन के संघर्ष में समानता दिखाई दी ।**

- रेटजेल राज्य के क्षेत्रीय विकास हेतु आधारभूत नियम प्रतिपादित किए:

1. जनसंख्या स्थानांतरण के कारकों का अध्ययन । राज्य की जनसंख्या और उसके भौगोलिक क्षेत्र के बीच गहन आत्मिक संबंध बताया जो कि राष्ट्रीय एकता की भावना से संबंधित होता है।

2. राज्य एक जैविक इकाई होती है, जिसकी अपनी एक स्वतंत्र पहचान होती है । अन्य राज्य से प्रतिस्पर्धा । राजनीतिक सीमाओं अथवा जन शून्य प्रदेशो द्वारा पृथक होती है।

3. राज्य की केदता का आधार अंतर्वास क्षेत्रीय समायोजन एकात्मता होती है। कालांतर में सीमा पार क्षेत्र भी आत्मसात कर लिए जाते हैं।

4. उपान्तीय एवं अनुपजाऊ क्षेत्रों प्रसार नहीं होता। राज्य विकास की प्रतिस्पर्धा द्वारा क्षेत्रीय स्वरूप द्वारा क्षेत्रीय स्वरूप परिवर्तनशील रहता है। परंतु इसका नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है जो कि राज्यों की उत्क्रांति का अनिवार्य अंग है।

5. क्षेत्रीय परिवर्तन मानव जीवन के स्थायित्व व स्थायित्व को प्रभावित करता है तथा राज्यों की विकास यात्रा का यह अपरिहार्य अंग है।

6. क्षेत्रीय परिवर्तन राज्य के विकास में तीन विशिष्ट प्रकार की प्रवृत्तियों को जन्म देता है प्रथम विवर्धन द्वितीय जनन जो दोनों साथ साथ सक्रिय रहती है तथा तीसरी स्थापन।

- **राज्य विकास की तुलना पादप विकास से की जाती है, एक जीवंत इकाई है जिसका संबंध इतिहास से होता है।**
- **राज्य की जैविक परिकल्पना राज्य की प्रकृति तथा उसका विकास तीन आधारभूत तत्वों पर निर्भर करता है:-**

1. राज्य क्षेत्रीय कई है जिसके दो पक्ष है भौतिक एवं सापेक्ष परिस्थिति सापेक्ष परिस्थिति।

2. राज्य के निर्माण के दो आधारभूत तत्व जनसंख्या एवं भौगोलिक क्षेत्र।

3. राज्य की क्षेत्र प्रसार प्रवृत्ति । यह प्रवृत्ति शक्ति की परिचायक एवं राजनीतिक सीमाओं के सतत परिवर्तनशीलता को प्रभावित करती है।

- **कालांतर में क्षेत्र प्रसार संबंधी अवधारणा जर्मन भू राजनीति की "शरणस्थान संकल्पना" का आधार बनी । शरणस्थान, वह क्षेत्र जहां कोई भी प्राणी अपनी विकास यात्रा पूरी करता है ।राज्य की जैविक परिकल्पना के अनुरूप द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इसका दुरुपयोग हुआ।**
- **पॉलीटिकल ज्योग्राफी राज्यों का भूगोल तथा भौगोलिक विश्लेषण था । राज्य जीवंत इकाई या विवेकशील मानव समूह जिस पर सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव पड़ता है। राज्य की वास्तविक शक्ति, नागरिक मानसिकता क्षेत्र प्रसार की भावना में निहित।**

रेटजेल के वैचारिक संस्कार

- रेटजेल के विचार डार्विन के अतिरिक्त दो अन्य विचारको की मान्यताओं से भी प्रभावित थे। जर्मन भूगोलविद कार्ल रिटर (1779-1859)द्वारा प्रतिपादित विकास परक भौगोलिक अध्ययन पद्धति ,
- गोटफ्रीड वॉन हर्डर (1744- 1803) के अनुसार किसी भी देश के इतिहास का सही विश्लेषण इतिहास के निर्माताओं की भौगोलिक स्थिति के संदर्भ द्वारा ही संभव होता है।
- रेटजेल तत्कालीन जर्मनी में सामाजिक इकाइयों के अध्ययन में समष्टि के विश्लेषण की प्रवृत्ति।

- यही कारण था कि ऐसे समय में जबकि यूरोपीय देशों में भूगोल का अध्ययन मुख्यतः छोटी-छोटी क्षेत्रीय इकाइयों और उनके मानव भूगोल संबंधी पक्षों के विश्लेषण पर केंद्रित था।
- आधुनिक वैज्ञानिक, मानव भूगोल के मानव समष्टि और भौगोलिक क्षेत्र विश्लेषण, उनकी परस्पर समग्रता से उत्पन्न वृहत क्षेत्रीय राजनीतिक इकाइयों के अध्ययन पर केंद्रित हुआ।
- क्षेत्रीय व्यापकता के कारण राजनीतिक भूगोल लंबे समय तक मुख्यधारा से अलग रहा परंतु सामाजिक उपादेयता के कारण यह एक लोकप्रिय शाखा के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। राजनीतिक भूगोल की एक त्वरित परंतु दूरगामी लोकप्रियता का मुख्य कारण रेटजेल द्वारा प्रतिपादित राज्य की जैविक परिकल्पना में तत्कालीन यूरोप में प्रचलित उपनिवेशवाद राज्य के आदर्श रूप का यथार्थवादी निरूपण प्रस्तुत हुआ था। तत्कालीन राजनीतिक चिंतन में राज्य की जैविक अवधारणा प्रमुख हो गई थी।

धन्यवाद

Disclaimer: The content displayed in the PPT has been taken from variety of different websites and book sources. This study material has been created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.